अलेक्सान्द्र कुप्रिन

मदारी

'मदारी' १६वीं सदी के अंत और २०वीं सदी के आरम्भ के एक सर्वाधिक प्रतिभावान लेखक अलेक्सान्द्र इवानोविच कुप्रिन की सबसे प्रसिद्ध बाल-कथा है।

कुप्रिन का जन्म १८७० में हुआ। उनके पिता एक छोटे नगर के दफ़्तर में काम करते थे। कुप्रिन ने अपनी जवानी में बहुत पापड़ बेले। वह फ़ौज में रहे, मुक्केबाज़ थे, एक जागीर का काम संभाला, थियेटर में अभिनय किया, एक कारखाने के कार्यालय में काम किया, उन्हें सरकस और हवाबाज़ी का शौक़ था, दंत-चिकित्सा की शिक्षा भी उन्होंने पाई। अपने समसामयिक रूसी जीवन का जो विविध, समृद्ध ज्ञान उन्होंने पाया, उसे अपनी कहानियों और उपन्यासों में उतारा।

प्रकृति और पशु-पक्षियों के बारे में तथा थियेटर और सरकस की घटनाओं पर कुप्रिन ने बच्चों के लिए कई कहानियां लिखीं। 'मैनाएं', 'ज़ेम्बो हाथी', 'चिड़ियाघर' और दूसरी कहानियां आज तक लोकप्रिय हैं। 'मदारी' कहानी उन्होंने १६०४ में लिखी। यह एक वास्तविक घटना पर आधारित है, जो कुप्रिन ने क्रीमिया में अपनी आंखों देखी थी।

महान अक्तूबर क्रांति के बाद कुप्रिन प्रवास में रहे। १६३७ में वह स्वदेश लौट आए। तब उन्होंने संवाददाताओं से कहा था: "मेरा बहुत मन है कि मैं सोवियत युवाजन के लिए, मनमोहक सोवियत बच्चों के लिए लिखूं"। किंतु, दुर्भाग्यवश, उनकी इन इच्छाओं को पूरा होना न बदा था: एक वर्ष बाद कुप्रिन का देहांत हो गया।

संकरी पहाड़ी पगडंडियों पर दाचों की एक बस्ती से दूसरी तक एक मदारी क्रीमिया के दक्षिणी तट के किनारे-किनारे बढ़ता जा रहा था। आगे-आगे सफ़ेद कुत्ता दौड़ रहा था – अपनी लंबी, गुलाबी जीभ एक ओर को लटकाए। कुत्ता पूडल नस्ल का था और उसके बाल शेर की तरह काटे हुए थे। चौराहों पर वह रुक जाता और दुम हिलाता हुआ प्रश्न भरी नज़र पीछे डालता। न जाने उसे कौन से लक्षण पता थे, पर वह सदा ठीक रास्ता जान लेता और मज़े में अपने झबरीले कान हिलाता तेज़ी से आगे दौड़ जाता। कुत्ते के पीछे बारह साल का लड़का सेर्गेइ चल रहा था। बाएं बगल में वह दरी दबाए हुए था, जिस पर वह कलाबाज़ी दिखाता था, और दाएं हाथ में छोटा सा, गंदा पिंजड़ा उठाए था। पिंजड़े में था गोल्डफ़िंच पक्षी, जो एक डिब्बे में से तमाशबीनों के भाग्य की रंग-बिरंगी पर्चियां निकालता था। सबसे पीछे मदारी मर्तीन लदीश्किन पैर घिसटता चल रहा था। अपनी झुकी हुई पीठ पर वह पिटारी वाला बाजा (स्ट्रीट आर्गन) उठाए था।

बाजा बड़ा पुराना था, उसकी आवाज़ फटी-फटी थी। दसियों बार उसकी मरम्मत हो चुकी थी। बाजा दो धुनें बजाता था: लाउनेर का जर्मन वाल्स और 'चीन की यात्रा' ओपेरा की एक धुन। दोनों धुनें तीस-चालीस साल पहले खूब चलती थीं, पर अब सब लोग उन्हें भूल-भाल चुके थे। इसके अलावा पिटारी में दो बहुत बड़ी खामियां थीं। एक तो उसमें उच्च स्वर का जो पाइप था, उसका गला बैठ गया था, वह बजता ही न था, इसलिए जब उसकी बारी आती, तो सारी धुन लड़खड़ाने लगती, हिचकियों के साथ बजती। एक नीचे स्वर वाला पाइप भी दग़ाबाज़ था: उसका कपाट फ़ौरन बंद नहीं होता था। एक बार वह बजने लगता, तो बस वही नीची तान खींचता रहता, और दूसरे सारे स्वर उसमें दब-दब जाते, जब तक कि कपाट अपनी मर्ज़ी से बंद न हो जाता। मदारी बाबा को खुद भी अपनी पिटारी की इन खामियों का अहसास था और वह मज़ाक़ में कहा करता था:

"क्या करें, भैया?.. बड़ा पुराना बाजा है... बहुत कुछ सह चुका है... बजाओ तो साहब लोग बुरा मानते हैं, कहते हैं: 'थू, कैसा भोंडा है!' पर धुनें तो बड़ी अच्छी थीं, खूब बजती थीं, हां, आजकल के साहबों को हमारे गाने पसंद नहीं। वो तो अब 'गेशा' सुनना चाहते हैं, या 'दो सिरा उकाब', 'चिड़ीमार' का वाल्स... ऊपर से पिटारी के ये पाइप भी दगा देते हैं... मिस्त्री के पास ले गया था, पर वह हाथ तक नहीं लगाना चाहता। कहता है नए पाइप लगाने चाहिए या कहता है, सबसे अच्छा तो यह है कि इसे किसी अजायबघर में दे दे, वहां इसे पुरानी चीज़ों की नुमाइश में रख देंगे। ओहो! खैर, भैया, अभी तक यह पिटारी हमारा पेट भरती आई है, भगवान करेगा, आगे भी भरती रहेगी।"

मदारी के मज़ाक़ में उदासी का पुट मिला होता। उसे अपना बाजा इतना प्यारा था, जितना कोई जीव ही हो सकता है, ऐसा कोई प्राणी, जिससे बहुत ही निकट का रिश्ता हो। अपनी कठोर घुमक्कड़ ज़िंदगी के बरसों के साथ में वह पिटारी का इतना आदी हो गया था कि उसे जानदार ही समझने लगा था। कभी-कभार किसी गंदी सराय में रात को बाबा के सिरहाने फ़र्श पर रखे बाजे से सहसा हल्की सी, कंपकंपाती, दुखद आवाज़ निकलती, जैसे बूढ़े की आह।

तब मदारी हौले से उसकी नक्काशीदार बगल सहलाता और प्यार से बुदबादाता :

"क्यों भैया, दुखी हो रहा है? ... सहे जा, भैया ..."

बाजे जितना ही, या शायद उससे थोड़ा ज़्यादा ही प्यार मदारी को अपने छोटे साथियों से था : आर्तो कुत्ते और नन्हे सेर्गेइ से। लड़के को उसने पांच साल पहले एक पियक्कड़, रंडवे मोची से "किराये" पर लिया था, उसे दो रूबल महीने में देने का वायदा किया था। पर मोची थोड़े दिनों में मर गया और सेर्गेइ सदा के लिए मन से भी और दाने-पानी के हित से भी मदारी बाबा के साथ बंध गया।

(२)

पगडंडी तट की ऊंची चट्टान पर सौ साला जैतूनों के बीच बल खाती बढ़ रही थी। कभी-कभी पेड़ों के बीच से समुद्र की झलक आती और तब लगता कि वह दूर जाने के साथ-साथ नीली सशक्त दीवार सा ऊपर भी उठ रहा है, रुपहली-हरी पत्तियों के बीच से उसका रंग और भी नीला, और भी गाढ़ा लगता। घास और झाड़ियों में, अंगूरों की बेलों और पेड़ों में, चारों ओर रइयों की झंकार गूंज रही थी, उनकी एकसुरी, निरंतर गूंज से मानो हवा कंपायमान हो रही थी। खासी गर्मी पड़ रही थी, एक पत्ती तक न हिल रही थी और तपी ज़मीन से तलवे जल रहे थे।

सेर्गेइ सदा की भांति बाबा के आगे-आगे चल रहा था। वह रुक गया और बाबा के पास आने का इंतज़ार करने लगा।

"क्या बात है, सेर्गेइ?" मदारी ने पूछा।

"बड़ी गर्मी है, बाबा ... सही नहीं जाती! नहा न लें ..."

बूढ़े ने चलते-चलते आदतन कंधा हिलाकर पीठ पर पिटारी ठीक की और बाज़ू से मुंह का पसीना पोंछा। नीचे फैली समुद्र की शीतल नीलिमा को ललचाई नज़रों से देखता हुआ बोला :

"वो तो बड़ा अच्छा रहे! पर नहाने के बाद गर्मी और भी तंग करेगी।

मुझे एक डाकदर ने बताया था कि यह जो खारा पानी है न यह आदमी को गर्मी में कमज़ोर करता है... चुस्ती तो क्या आएगी, बदन और भी ढीला पड़ जाएगा..."

"शायद, उसने झूठमूठ कहा हो," सेर्गेइ का मन बाबा की बात पर विश्वास नहीं करना चाहता था।

"वाह, झूठ काहे को बोलेगा? भरोसेमंद आदमी है, पीता नहीं... सेवास्तोपल में अपना घर है उसका। और फिर यहां तो समुद्र तक उतरने का रास्ता भी नहीं है। थोड़ा सब्र कर, अभी मिस्खोर तक पहुंच जाएं, बस वहीं अपना पापी शरीर धो लेंगे। खाने से पहले तो नहाने में मज़ा भी है... फिर थोड़ा सो भी सकते हैं... बड़ा अच्छा रहेगा..."

आर्तो ने पीछे बातें सुनीं, तो मुड़कर लोगों के पास दौड़ आया। उसकी नीली-नीली, भली आंखें गर्मी से सिकुड़ी हुई थीं। वह गद्गद सा बूढ़े और लड़के को देख रहा था, बाहर निकली हुई लंबी जीभ तेज़ सांस से कांप रही थी।

"क्यों, भई आर्तो? गर्मी है?" बाबा ने पूछा।

कुत्ते ने जीभ पाइप की तरह मोड़कर ज़ोर से जम्हाई ली, सारा बदन झकझोरा और बारीक सी आवाज़ में किकियाया।

"हां, भाई मेरे, कुछ नहीं किया जा सकता। कहा है न: 'अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा'... अब तेरे तो मान लिया वो माथा नहीं है, थूथनी ही है... अच्छा, चल आगे, क्यों पैरों में आता है... मुझे तो सेर्गेइ यह गर्मी अच्छी लगती है। बस यह पिटारी ही तंग करती है, नहीं तो भैया काम न होता तो बस कहीं घास पर, छाया में लेट रहता। तोंद ऊपर की ओर बस पड़े रहे। इन बूढ़ी हड्डियों के लिए तो इस धूप से बढ़कर और कुछ नहीं है।"

पगडंडी नीचे जाकर चौड़े रास्ते से मिल गई। रास्ता पत्थर सा सख्त था और इतना सफ़ेद कि आंखें चुंधियाती थीं। यहां से पुराना काउंट पार्क शुरू होता था। उसकी घनी हरियाली में सुंदर-सुंदर दाचे बने हुए थे, फूलों की क्यारियां लगी हुई थीं, फ़व्वारे थे। बूढ़ा मदारी इस सारे इलाक़े को अच्छी तरह जानता था। हर साल अंगूर की बहार में वह एक के बाद एक इन सब

जगहों का चक्कर लगाता था। इस मौसम में सारा क्रीमिया सजे-धजे अमीर लोगों से भर जाता था। दक्षिण की प्रकृति का वैभव बूढ़े के मन को नहीं छूता था, पर सेर्गेइ के लिए, जो पहली बार इधर आया था, यहां बहुत कुछ आश्चर्य-जनक था। मैग्नोलिया के पेड़, जिनकी सख़्त पत्तियां यों चमकती थीं, मानो उन पर पालिश की गई हो और सफ़ेद फूल रकाबियों जितने बड़े थे; अंगूर की बेलों से घिरे लता-मण्डप और अंगूरों के लटकते गुच्छे; उजली छाल और विशाल छत्रों वाले सदियों पुराने चनार वृक्ष; तम्बाकू-बागान, जल धाराएं और झरने तथा चारों ओर – क्यारियों, बाड़ों और दाचों की दीवारों पर चटकीले, खुशबूदार गुलाब – यह सारी फलती-फूलती भव्य प्रकृति बालक को विमुग्ध कर रही थी। वह पल-पल में बाबा का बाज़ू खींचता और अपनी खुशी व्यक्त करता। एक बाग के बीचोंबीच बड़ा कुंड था, बाग के जंगले से चिपटकर सेर्गेइ चिल्लाया:

"बाबा, बाबा, देखो तो, फ़व्वारे में सुनहरी मछलियां हैं! सच, भगवान कसम, सुनहरी मछलियां हैं! बाबा! वो देखो, आड़ू! कितने सारे आड़ू हैं! एक ही पेड़ पर!"

"चल-चल, बुधुए! क्या मुंह बाए खड़ा है!" बाबा ने मज़ाक़ से उसे आगे धकेला। "ज़रा सब्र कर। कुछ दिनों में हम नवारसीस्क तक पहुंच जाएंगे और वहां से फिर दक्खिन को हो लेंगे। वहां हैं देखने लायक़ जगहें। एक से एक बढ़कर शहर हैं, वह लो सोची, फिर आए आदलर, तुआप्से, और फिर भाई मेरे सुखूमी, बतूमी ... तेरी तो बस आंखें फटी की फटी रह जाएंगी। वो ताड़ के पेड़ को ही लो। देखके दांतों तले उंगली दबा लेगा! तना उसका ऐसा रोयेंदार है जैसे नमदा और पत्ती इत्ती बड़ी कि हम दोनों उसके तले समा जाएं!"

"सच?" सेर्गेइ हैरान और खुश हुआ।

"बस सब्र रख, अपनी आंखों देख लेगा। और भी कोई कम चीज़ें हैं क्या वहां? माल्टा या वो नींबू ही लो ... देखा होगा तूने दुकान में?"

"हूं?"

"बस ऐसे ही हवा में लटकता रहता है। पेड़ पर मज़े से यों उगता है, जैसे हमारे यहां सेब या नाशपाती ... और वहां पर लोग भी तरह-तरह के हैं:

तुर्क, पारसी, चेर्केस ... सब लंबे-लंबे चोग़े पहने और कमर पर खंजर बांधे घूमते हैं। बड़े जांबाज़ लोग हैं! और वहां हब्शी भी होते हैं। मैंने बतूमी में कई बार देखे हैं।"

"हब्शी? हां, मुझे पता है। उनके सिर पर सींग होते हैं," सेर्गेइ ने पूरे विश्वास के साथ कहा।

"सींग-वींग तो ख़ैर उनके नहीं होते, यह सब झूठ है। पर काले होते हैं, बूटों जैसे और चमकते भी हैं। मोटे-मोटे होंठ उनके लाल सुर्ख़ होते हैं, आंखें सफ़ेद-सफ़ेद और बाल ऐसे घुंघराले जैसे काली भेड़ के।"

"डर लगता होगा न इन हब्शियों से?"

"क्या बताऊं? पहले-पहल देखके तो आदमी सहम जाता है ... पर फिर जब देखो कि दूसरे लोग नहीं डरते, तो अपनी भी हिम्मत बढ़ जाती है ... हां भैया, क्या कुछ नहीं है वहां। वहां जाएंगे, ख़ुद देख लेगा। बस एक ही बुरी बात है – वहां ताप फैलता है। चारों ओर दलदल हैं न, इसीलिए। वहां के लोगों को तो कुछ नहीं होता, पर बाहर से आए को यह ताप तंग करता है। अच्छा, ख़ैर बहुत बातें बना लीं। चल, ज़रा घुस तो इस फाटक में। इस दाचा में बड़े अच्छे साहब रहते हैं ... तू मुझ से पूछ सेर्गेइ: मैं सब जानता हूं!"

पर आज वे न जाने किसका मुंह देखकर निकले थे। कई जगहों से उन्हें दूर से देखकर ही भगा दिया जाता, दूसरी जगहों पर बाजे की फटी-फटी आवाज़ सुनते ही साहब लोग छज्जे पर बेसब्री से हाथ झटकने लगते और कहीं नौकर कहते कि साहब लोग अभी आए नहीं। हां दो दाचों से उन्हें तमाशे के लिए कुछ पैसे मिले, पर बहुत थोड़े। वैसे तो बाबा थोड़े पैसे लेने में भी हिचकिचाता नहीं था। दाचा से बाहर निकलते हुए वह ख़ुशी से जेब में तांबे के सिक्के झनझना रहा था और कह रहा था:

"दो और पांच हो गए पूरे सात ... क्यों, भई सेर्गेइ, ये भी पैसे हैं। सात बार सात और हो गया आधा रूबल। बस हम तीनों का पेट भर जाएगा और रैनबसेरा भी हो जाएगा और बूढ़ा लदीश्किन भी दो बूंदों से गला तर कर लेगा, अपनी बूढ़ी हड्डियां सेंक लेगा ... ओह, नहीं समझते ये साहब लोग! बीस कोपेक देते हुए उन्हें अफ़सोस होता है और पांच देते शर्म लगती है। बस,

इसीलिए चलता करते हैं। अरे भई, तुम तीन कोपेक ही दे दो। मैं कोई बुरा थोड़े ही मानता हूं ... बुरा काहे का मानना ?"

बूढ़ा मदारी सीधे-सादे स्वभाव का था और जब उसे लोग भगाते, तब भी वह कुछ नहीं कहता था। पर आज एक मेम साहब की वजह से वह आपे में न रहा था। गदराए बदन की, खूबसूरत सी और देखने में भली लगनेवाली औरत थी वह। बड़ा शानदार दाचा था उसका, फूलों के बाग से घिरा। बड़े ध्यान से उसने बाजा सुना, और भी ध्यान से सेर्गेइ की कलाबाज़ी और आर्तो के तमाशे देखे। फिर बड़ी देर तक कुरेद-कुरेदकर लड़के से पूछती रही कि वह कितने साल का है, उसका नाम क्या है, कलाबाज़ी उसने कहां सीखी, बूढ़ा उसका क्या लगता है, उसके मां-बाप क्या करते थे वगैरह-वगैरह ; फिर उसने रुकने को कहा और अंदर चली गई।

कोई दस या शायद पंद्रह मिनट तक ही वह बाहर नहीं आई। जितना अधिक समय बीत रहा था, उतनी ही अधिक मदारी और लड़के के मन में अस्पष्ट सी आशाएं बढ़ती जा रही थीं। बाबा ने मुंह पर हाथ रखकर लड़के के कान में कहा :

"ले, सेर्गेइ, आज तो क़िस्मत खुल गई, तू बस मेरी बात सुना कर : मुझे सब पता है। शायद कोई कपड़ा-लत्ता दे दे या पुराना जूता। पक्की बात है !"

आखिर मेम साहब छज्जे पर आई, ऊपर से सेर्गेइ की आगे बढ़ी टोपी में छोटी सा सफ़ेद सिक्का फेंका और तुरंत ही अंदर चली गई। सिक्का पुराना था, दोनों ओर से घिसा हुआ। यही नहीं, दस कोपेक के इस सिक्के में छेद भी था। बाबा बड़ी देर तक हैरान-परेशान सा सिक्के को देखता रहा। वह बाहर रास्ते पर निकल आया था, दाचा काफ़ी पीछे छूट गया था, पर सिक्के को अभी तक हथेली पर रखे हुए था, मानो तोल रहा हो। सहसा वह रुक गया और बोला :

"हां-आं !.. क्या कहने हैं ! पूछो मत ! हम तीन बेवक़ूफ़ खूब ज़ोर लगा रहे थे। तमाशा दिखा रहे थे। इससे तो अच्छा बटन ही दे देती, ज़रूरत पड़ने पर कहीं सी तो लेते। इस कूड़े का मैं क्या करूंगा ? मेम सा'ब सोचती होंगी कि बूढ़ा अंधेरे में कहीं चला देगा इसे। नहीं, मेम सा'ब, ग़लत सोचती हैं आप !

बूढ़ा लदीश्किन ऐसी नीचता नहीं करता! जी हां! यह लो, संभालो अपना क़ीमती सिक्का! लो!"

और उसने क्रोध और गर्व के साथ सिक्का फेंक दिया। सिक्का हौले से खनका और रास्ते की सफ़ेद धूल में समा गया।

इस तरह बूढ़ा मदारी लड़के और कुत्ते के साथ दाचों की इस पूरी बस्ती का चक्कर लगा चुके थे और अब वे नीचे समुद्र की ओर जाने की सोच ही रहे थे। बाईं ओर एक आखिरी दाचा बच गया था। ऊंची सफ़ेद दीवार से घिरा वह दिखाई न देता था। दीवार के पीछे घनी कतार में सरू के पतले तने वाले, ऊंचे, धूल भरे पेड़ उग रहे थे, जो दूर से सुरमई तकलों से लगते थे। लोहे के चौड़े फाटक पर बड़ा शानदार काम किया हुआ था और वह लेस से सजा लगता था। इस फाटक में से ही चटकीले हरे, रेशमी लॉन का एक कोना और फूलों की क्यारी दिखती थी और दूर पीछे अंगूर की बेलों से ढंकी वीथिका। लॉन के बीचोंबीच खड़ा माली लंबे पाइप से गुलाबों को पानी दे रहा था। उसने पाइप के छेद पर उंगली रखी हुई थी और इससे अनगिनत छींटों में धूप इंद्र-धनुषी रंगों में चमक रही थी।

बूढ़ा मदारी फाटक से आगे निकलने ही वाला था, पर उसने अंदर झांककर देखा और ठिठक गया।

"ज़रा रुकियो तो सेर्गेइ," उसने लड़के को आवाज़ दी। "लगता है अंदर लोग हैं। क्या तमाशा है? कितने बरस से यहां आ रहा हूं, कभी कोई नहीं दिखा। चल तो सेर्गेइ!"

"'दोस्ती दाचा'। अंदर आना मना है'," सेर्गेइ ने फाटक के एक खंभे पर खुदे शब्द पढ़े।

"दोस्ती?" अनपढ़ बाबा ने पूछा। "आहा! दोस्ती! यही तो असली बात है! सारा दिन हमारा बेकार गया है, पर यहां से हम खाली हाथ नहीं जाएंगे। मुझे इसकी गंध आ रही है, यही समझ ले, जैसे शिकारी कुत्ते को दूर से पता चल जाता है। चल रे आर्तो, कुत्ते की औलाद! सेर्गेइ, बढ़ जा हिम्मत से। तू मुझसे पूछा कर: मैं सब जानता हूं।"

बाग की पगडंडियों पर मोटी-मोटी रोड़ी बिछी हुई थी और दोनों ओर बड़ी-बड़ी गुलाबी सीपियां लगी हुई थीं। क्यारियों में रंग-बिरंगी घासों का मानो कालीन बिछा हुआ था और उनके ऊपर अजीबोग़रीब से चटकीले फूल उठे हुए थे, जिनसे हवा में भीनी-भीनी सुगंध फैल रही थी। जलाशयों में पारदर्शी जल की कलकल हो रही थी। पेड़ों के बीच-बीच ऊंचाई पर लगे गमलों से लताएं लटक रही थीं, और घर के सामने संगमरमर के दो ऊंचे खंभों पर शीशे के गोले लगे हुए थे, जिनमें मदारी और उसके साथियों ने अपनी उल्टी, टेढ़ी-मेढ़ी छवि देखी।

बरामदे के सामने बड़ा सा पक्का चौक था। सेर्गेइ ने वहां अपनी दरी बिछा दी, बाबा ने पिटारी को एक डंडे पर टिकाया और हैंडल घुमाने को तैयार हो गया, पर तभी एक विचित्र, अप्रत्याशित दृश्य की ओर उनका ध्यान आकर्षित हुआ।

अंदर के कमरों से आठ-दस साल का एक लड़का गला फाड़कर चीखता हुआ बम की तरह बरामदे पर आ धमका। वह मल्लाहों की हल्की वर्दी जैसे कपड़े पहने था – बांहें नंगी थीं और घुटने भी। लंबे-लंबे, घुंघराले बाल कंधों पर बिखरे पड़े थे। लड़के के पीछे-पीछे और छह लोग दौड़े आए: एप्रन बांधे दो औरतें; लंबा कोट पहने बूढ़ा मोटा चोबदार, जिसकी दाढ़ी-मूंछें साफ़ थीं पर कनपटियों पर ख़ूब लंबे सफ़ेद गलमुच्छे थे; चौखानेदार नीला फ़ाक पहने, लाल बालों और लाल नाक वाली दुबली-पतली लड़की; जवान, देखने में रुग्ण लगनेवाली, पर बहुत सुंदर महिला, जो लेसदार आसमानी गाउन पहने थी और सबसे आख़िर में एक मोटा, गंजा साहब – सुनहरा चश्मा चढ़ाए। वे सब बहुत व्यथित थे, हाथ झटक रहे थे, ज़ोर-ज़ोर से बोल रहे थे और एक दूसरे को धकेल रहे थे। यह अनुमान लगाना कठिन न था कि उनकी सारी परेशानी का कारण वह लड़का है, जो यों अचानक बरामदे पर आ धमका था।

उधर वह लड़का लगातार चीखता हुआ दौड़ते-दौड़ते पेट के बल जा गिरा, तुरंत पीठ के बल उलट गया और बड़े ज़ोर-ज़ोर से चारों ओर हाथ-पैर फेंकने

लगा। बड़े उसके इर्द-गिर्द दौड़-धूप करने लगे। बूढ़ा चोबदार मिन्नतें करता हुआ अपनी कलफ़ लगी कमीज़ पर दोनों हाथ जोड़ रहा था, गलमुच्छे हिला रहा था और रुआंसी आवाज़ में कह रहा था :

"छोटे मालिक! .. ऐसा न कीजिए... मां को दुखी न कीजिए... मेहरबानी करके पी लीजिए। मिक्सचर तो मीठा है, एकदम शर्बत सा। उठ जाइए न..."

एप्रन बांधी औरतें हाथ झटक रही थीं, सहमी-सहमी और साथ ही जी हुज़ूरी करती हुई अपनी पतली आवाज़ों में जल्दी-जल्दी बोल रही थीं। लाल नाकवाली मिस बड़े दुखद अंदाज़ में ज़ोर-ज़ोर से कुछ चिल्ला रही थी, पर कुछ समझ में न आता था, शायद वह किसी विदेशी भाषा में बोल रही थी। सुनहरा चश्मा चढ़ाए साहब नीची, भारी आवाज़ में लड़के को मना रहा था, साथ ही वह अपना सिर कभी एक ओर तो कभी दूसरी ओर झुकाता और हाथ फैला देता। सुंदर महिला आहें भर रही थी, लेस का महीन रूमाल आंखों से लगा रही थी :

"ओह, त्रिल्ली, ओह! हे भगवान! मेरे राजा, मैं विनती करती हूं। सुन लो मेरी बात, मैं हाथ जोड़ती हूं। पी लो न दवाई : देख लेना, तुरंत आराम मिलेगा : पेट भी ठीक हो जाएगा, सिर भी। पी लो न, मेरी खातिर पी लो, मेरे लाल! त्रिल्ली, बोलो, मां तुम्हारे सामने घुटनों के बल खड़ी हो जाए? यह देखो, मैं घुटनों पर खड़ी हूं। चलो, सोने का सिक्का लोगे? दो सिक्के? पांच सिक्के? त्रिल्ली! गधा लोगे? जीता-जागता गधा! घोड़ा?.. ओह, डाक्टर, कुछ कहिए न इसे!"

"सुनिए, त्रिल्ली, मर्द बनिए," चश्मा चढ़ाए मोटा साहब भारी आवाज़ में बोला।

"हाय-हाय-हाय!" लड़का चीखता जा रहा था, बरामदे में छटपटा रहा था और बेतहाशा टांगें फेंक रहा था।

अत्यधिक उत्तेजित होने के बावजूद वह अपने इर्द-गिर्द जमा लोगों के पेट में ही जूतों की एड़ियां दे मारने की कोशिश करता था और वे भी बड़ी सफ़ाई से बच निकलते थे।

सेर्गेइ आश्चर्यचकित सा बड़ी देर तक कौतूहल के साथ यह सारा दृश्य देखता रहा। फिर उसने बाबा के बगल में हौले से कोहनी मारी और फुसफुसाकर पूछा :

"बाबा, क्या हुआ इसे? इसकी पिटाई करेंगे क्या?"

"हुं, पिटाई!.. अरे, यह तो खुद चाहे जिसकी पिटाई कर दे। बिगड़ा छोकरा है। बीमार हो गया होगा।"

"पागल है?" सेर्गेइ ने अनुमान लगाया।

"मुझे क्या पता? चुप रह!"

"हाय-हाय-हाय! गधे! बेवक़ूफ़!" लड़का और भी ज़ोर-ज़ोर से गला फाड़ रहा था।

"सेर्गेइ, शुरू कर! मुझे पता है!" अचानक बूढ़े मदारी ने कहा और दृढ़ निश्चय के साथ बाजे का हैंडल घुमाने लगा।

बड़ी पुरानी धुन की फटी-फटी, बेसुरी आवाज़ बाग़ में गूंज उठी। बरामदे में सब ठिठक गए, यहां तक कि लड़का भी कुछ क्षण को चुप हो गया।

"ओहो! हे भगवान! ये लोग बेचारे त्रिल्ली को और भी परेशान कर देंगे।" आसमानी गाउन पहने महिला बोली। "भगाओ इन्हें जल्दी से! यह गंदा कुत्ता भी है इनके साथ। कुत्तों को हमेशा ऐसी भयानक बीमारियां होती हैं। इवान, क्या आप बुत बने खड़े हैं?"

उसने घिन के साथ मदारी की ओर रूमाल हिलाया, चेहरे से वह एकदम थकी-मांदी लगती थी। लाल नाक वाली मरियल मिस ने डरावनी आंखें बनाईं, कोई फुफकारने लगा ... लंबा कोट पहने आदमी जल्दी से बरामदे से नीचे उतर आया। उसके चेहरे पर डर का भाव था, दोनों ओर हाथ फैलाए वह दौड़ा-दौड़ा मदारी के पास आया।

"यह क्या बदतमीज़ी है?" वह दबी-दबी, सहमी हुई, पर साथ ही रोबदार और गुस्से भरी आवाज़ में बोला। "किसने तुम्हें आने दिया? भागो यहां से!"

पिटारी से चीं सी आवाज़ निकली और वह चुप हो गई।

"जी हज़ूर, वो बात यह है ..." बाबा ने आराम से उसे समझाना चाहा।

"कोई बात-वात नहीं। दफ़ा हो जाओ!" लंबे कोट वाला सीटी की तरह चीखा।

उसका मोटा चेहरा पलक झपकते ही लाल सुर्ख़ हो गया और आंखें तो मानो बाहर ही निकल आईं और घूमने लगीं। वह इतना डरावना लगता था कि बाबा अनचाहे ही दो क़दम पीछे हट गया।

"चल सेर्गेइ, चलें," पिटारी को जल्दी-जल्दी पीठ पर रखते हुए वह बोला।

पर वे दस क़दम दूर भी न गए थे कि बरामदे से फिर कर्णभेदी चीखें आने लगीं।

"हाय-हाय-हाय! देखूंगा! हाय! बुलाओ! मैं देखूंगा!"

"ओह, त्रिल्ली!.. हे भगवान! त्रिल्ली! अरे, बुलाओ न उन्हें," महिला आहें भरने लगी। "उफ़्फ़, कैसे मूर्ख हो तुम सब! इवान, सुना आपने क्या कहा मैंने? बुलाओ इन भिखारियों को तुरंत!"

"सुनो बे! ऐ! मदारी! वापस आओ!" बरामदे से एक साथ कई आवाज़ें आईं।

मोटा चोबदार रबड़ की गेंद की तरह उछलता हुआ मदारी के पीछे दौड़ा। उसके गलमुच्छे दोनों ओर फैल रहे थे।

"ऐ-ऐ! मदारी! सुनो! चलो वापस!" वह दोनों हाथ हिलाता चिल्ला रहा था, उसकी सांस फूल रही थी। "ऐ, बड़े मियां," आखिर उसने बाबा की बांह पकड़ ली। "चलो वापस! साहब लोग तमाशा देखेंगे! चलो जल्दी से!"

"हुं, क्या बला है!" बाबा ने सिर हिलाते हुए उसांस छोड़ी, और बरामदे के पास चला गया। पिटारी उतारकर उसे अपने सामने डंडे पर टिकाया जिस जगह अभी-अभी धुन रुकी थी, वहीं से आगे बजाने लगा।

बरामदे में भगदड़ रुक गई। लड़के के साथ महिला और सुनहरे चश्मे वाला साहब रेलिंग के पास आ गए, बाक़ी सब पीछे खड़े रहे। बाग़ में से माली आकर बाबा से थोड़ी दूर खड़ा हो गया। न जाने कहां से प्रकट हो गया जमादार माली के पीछे जम गया। वह भीमकाय दढ़ियल आदमी था – तंग

माथा और चेचकरू चेहरा। वह नई गुलाबी कमीज़ पहने था, जिस पर काले-काले गोलों की तिरछी कतारें थीं।

फटी-फटी हिचकियां भरती धुन की लय में सेर्गेइ ने दरी बिछाई, जल्दी से अपनी किरमिच की पतलून उतारी (वह पुराने बोरे की बनाई गई थी और उसके पीछे के सबसे चौड़े हिस्से पर कम्पनी का चौखाना ठप्पा लगा हुआ था), उसने अपनी पुरानी जैकट उतारी और बस अंतरीय कपड़े पहने रहा। उन पर कई पैबंद लगे हुए थे, पर तो भी वे उसके दुबले-पतले, किंतु सशक्त और लचकीले शरीर पर चुस्त लगते थे। बड़ों की नकल करते हुए उसने पुराने कलाबाज़ के तौर-तरीक़े सीख लिए थे। दौड़ते हुए दरी पर पहुंचा और होंठों पर दोनों हाथ रखे, फिर नाटकीय ढंग से उन्हें दोनों ओर फैलाया, मानो दर्शकों को दो हवाई चुम्बन भेजे।

बाबा एक हाथ से पिटारी का हैंडल घुमाता जा रहा था, उसमें से थर-थराती, लड़खड़ाती धुन निकाल रही थी और दूसरे से लड़के को तरह-तरह की चीजें फेंक रहा था, जिन्हें वह हवा में ही पकड़ लेता। सेर्गेइ थोड़े से ही करतब जानता था, पर बड़ी सफ़ाई से और तत्परता से उन्हें पेश करता था। वह बीयर की खाली बोतल हवा में यों उछालता कि वह कई बार घूम जाती और फिर अचानक उसे गरदन की ओर से तश्तरी के सिरे पर पकड़ लेता और कुछ क्षण तक यों ही संभाले रहता; चार गेंदों को एकसाथ उछालता और दो मोमबत्तियों को, जिन्हें वह एक साथ शमादान में पकड़ लेता; फिर वह एकसाथ ही तीन अलग-अलग चीज़ों – पंखे, लकड़ी के सिगार और छाते से खेलता। तीनों चीज़ें हवा में उड़तीं और फिर सहसा छाता उसके सिर पर आ जाता, सिगार मुंह में और पंखा बड़े नाज़ से चेहरे पर हवा करता। अंत में सेर्गेइ ने दरी पर कलाबाज़ियां लगाईं, "मेंढक" बना, "अमरीकी गांठ" दिखाई और हाथों के बल चला। अपने सारे करतब दिखाकर उसने फिर दर्शकों की ओर चुम्बन भेजे और हांफता हुआ बाबा के पास आ गया – पिटारी पर उसकी जगह लेने।

अब आर्तो की बारी थी। कुत्ते को यह अच्छी तरह मालूम था और वह काफ़ी देर से उत्तेजित सा चारों पंजों से बाबा पर कूद रहा था, जो पीठ से

पट्टा उतार रहा था। आर्तो रुक-रुककर भौंक रहा था; कौन जाने, इस तरह वह समझदार कुत्ता यह कहना चाहता हो कि उसके विचार में इतनी गर्मी में यह सब कलाबाज़ी दिखाना नासमझी ही है। पर बूढ़े मदारी ने चालाकी दिखाते हुए पीठ पीछे से संटी निकाल ली। "मुझे पता था यही होगा!" आर्तो झल्लाकर आखिरी बार भौंका और अलसाया और अनमना से पिछली टांगों पर खड़ा हो गया। पलकें झपकाते हुए वह एकटक मालिक को देखता जा रहा था।

"आर्तो, काम करो! ऐसे, ऐसे, ऐसे!.." आर्तो के सिर के ऊपर संटी पकड़े हुए मदारी बोला। "कलाबाज़ी खाओ! ऐसे! एक बार और... और, और... नाच, आर्तो, नाच!.. बैठ जा! क्या-आ? नहीं बैठना चाहता? कहा न, बैठ जा। आहा... ऐसे! देखा! अब हज़ूर को सलाम करो! आर्तो!" मदारी ने धमकी भरी आवाज़ में कहा।

"भौं!" कुत्ता घिन के साथ भौंका। फिर दयनीय आंखों से मालिक की ओर देखकर और दो बार भौंका: "भौं! भौं!"

"नहीं, मेरा मालिक मेरे मन की बात नहीं समझता," उसका रूठा स्वर कहता लगता था।

"यह हुई न बात! विनम्रता सबसे बढ़कर है। चलो अब थोड़ा कूदें," ज़मीन से थोड़ी ऊपर संटी बढ़ाते हुए बूढ़ा कहता जा रहा था। "चलो! अरे, जीभ क्यों निकालता है, भई! शाबाश! ऐसे! फिर से! शाबाश, आर्तो! घर जाके तुझे गाजर दूंगा। क्या? तू गाजर नहीं खाता? अरे, मैं भूल ही गया। तो ले मेरा विलायती टोप्पा, साहब लोगों से कुछ मांग ले। शायद वे तुझे कोई बढ़िया चीज़ दे दें।"

बूढ़े ने कुत्ते को पिछली टांगों पर खड़ा किया और उसके मुंह में अपनी गोल, चपटी, चीकट टोपी थमा दी, जिसे वह मीठे व्यंग्य के साथ "विलायती टोप्पा" कहता था। टोपी मुंह में पकड़े और अपनी मुड़-मुड़ जाती टांगें नखरे के साथ आगे बढ़ाते हुए आर्तो बरामदे के पास पहुंच गया। रुग्ण सी दिखनेवाली महिला के हाथ में सीपी का पर्स प्रकट हुआ। उसके आस-पास खड़े लोग सहानुभूति के साथ मुस्करा रहे थे।

"देखा? कहा था न मैंने?" बाबा ने सेर्गेइ की ओर झुककर उसे चिकुटी

भरी। "तू मुझ से पूछ: मैं सब जानता हूं। रूबल से कम नहीं देगी।"

उसी क्षण बरामदे से ऐसी तीखी चीख आई कि लगता था आदमी तो ऐसे चीख ही नहीं सकता। आर्तो ने सकपकाकर टोपी मुंह से गिरा दी और दुम दबाकर, सहमी-सहमी नज़रों से मुड़कर देखता हुआ उछलकर मालिक के पैरों में आ दुबका।

"कुत्ता, हाय, कुत्ता," घुंघराले बालों वाला लड़का पैर पटकता हुआ बेतहाशा चिल्ला रहा था। "मुझे दे दो, हाय, दे दो! त्रिल्ली को कुत्ता दे दो! हाय-हाय-हाय!"

"हे भगवान! ओह त्रिल्ली! छोटे मालिक!.. त्रिल्ली, चुप हो जाओ, मैं हाथ जोड़ती हूं!" फिर से बरामदे में भगदड़ मच गई।

"कुत्ता! हाय, कुत्ता दो! मुए, गधे, उल्लू!" लड़का आपे से बाहर हो रहा था।

"ओह, मेरे राजा, परेशान मत हो!" आसमानी गाउन वाली महिला उसे पुचकारने लगी। "तुम कुत्ते को सहलाना चाहते हो? अच्छा, अच्छा, मेरे लाड़ले, अभी लो। डाक्टर, क्या ख्याल है आपका, त्रिल्ली कुत्ते को सहला सकते हैं?"

"वैसे तो न करना ही अच्छा हो, पर हां, अगर कुत्ते को बोरिक एसिड या कार्बोलिक के घोल से धो दिया जाए, तो..."

"हाय, कुत्ता-आ-आ!"

"अभी, मेरे लाल, अभी। सो, डाक्टर, हम उसे बोरिक एसिड से धोने को कह देते हैं और तब... ओह, त्रिल्ली, ऐसे घबराओ नहीं! ऐ, मदारी, इधर लाओ तो अपने कुत्ते को। डरो नहीं, हम तुम्हें पैसे देंगे। सुनो, कुत्ते को कोई बीमारी तो नहीं? बावला तो नहीं? या खुजली तो नहीं है इसे?"

"नहीं, सहलाना नहीं, मैं तो बिल्कुल लूंगा!" मुंह और नाक से बुलबुले छोड़ता हुआ त्रिल्ली चिल्लाए जा रहा था। "मुझे दे दो! गधे, उल्लू! बिल्कुल मुझे! मैं अपने आप खेलूंगा!.."

"सुनो, मदारी, इधर आओ," महिला उसकी चीख से भी ज़ोर से चीखने की कोशिश कर रही थी। "ओह, त्रिल्ली, तुम अपनी चीखों से मां की जान

ले लोगे ! क्यों आने दिया इन मदारियों को ! इधर आओ भी न, पास आओ, कहा न, और पास ! ऐसे ... ओह, त्रिल्ली, यों दुखी मत हो, मां तुम्हारे लिए सब कुछ कर देगी। मान जाओ। मिस, आखिर चुप भी कराओ न बच्चे को ... डाक्टर, प्लीज़। मदारी, बोलो कितने पैसे लोगे ?"

बाबा ने टोपी उतार ली। उसके चेहरे पर आदर-सम्मान और साथ ही दीनता का भाव आ गया।

"जो हज़ूर, माई-बाप की इच्छा हो, मालकिन ... हम तो छोटे लोग हैं, जो दे देंगे, वही अच्छा है ... आप तो खुद ही बूढ़े का दिल रखेंगे, माई-बाप ..."

"ओफ़्फ़ो, कैसे मूर्ख हो तुम भी ! त्रिल्ली, तुम्हारा गला दुखने लगेगा। समझते क्यों नहीं कुत्ता तुम्हारा है, मेरा नहीं। बोल कितने लेगा ? दस ? पंद्रह ? बीस ?"

"हाय-हाय-हाय ! दे दो कुत्ता, मुझे कुत्ता दे दो !" गोल-मटोल चोबदार के पेट में पैर मारते हुए लड़का चिल्लाए जा रहा था।

"जी ... हज़ूर, वो ... माफ़ करना," बूढ़ा सकपका गया। "मैं बूढ़ा बेअकल हूं ... एकदम तो समझ में नहीं आता ... और कुछ ठीक से सुनाई भी नहीं देता ... जी हज़ूर ने क्या कहा ?.. कुत्ते के ?"

"हे भगवान !.. लगता है तुम जानबूझकर बेवक़ूफ़ बन रहे हो ?" महिला ताव में आ गई। "धाय, जल्दी से पानी दो त्रिल्ली को ! मैं तुमसे सीधे-सीधे पूछ रही हूं, कितने में बेचोगे अपना कुत्ता ? समझे कि नहीं, कुत्ता !"

"कुत्ता-आ, हाय, कुत्ता-आ !" लड़का पहले से भी ज़ोर से चिल्लाए जा रहा था।

बूढ़ा मदारी बुरा मान गया और उसने टोपी पहन ली।

"हज़ूर, हम कुत्ते नहीं बेचते," उसने सीधे-सीधे, मान के साथ कहा। "और यह कुत्ता तो हम दोनों की," उसने अंगूठे से कंधे के पीछे सेर्गेइ की ओर इशारा किया, "रोज़ी-रोटी कमाता है। सो यह तो बिल्कुल नामुमकिन है कि इसे बेच दें।"

उधर त्रिल्ली इंजन की सीटी जैसी तीखी आवाज़ में चीखे जा रहा था। उसे गिलास में पानी दिया गया, पर उसने गुस्से से पानी मिस के मुंह पर दे फेंका।

"अरे सुनो तो, पागल कहीं का!.. ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जो बिकती न हो," महिला अपनी कनपटियों को हथेलियों से दबाते हुए कहती जा रही थी। "मिस, जल्दी से मुंह पोंछो और मुझे मेरी सिर दर्द की गोली दो। तुम्हारा कुत्ता क्या सौ रूबल का है? दो सौ का? तीन सौ का? बोलो भी न काठ के उल्लू! डाक्टर, भगवान के वास्ते कुछ कहिए न इसे!"

"सेर्गेइ, उठा अपना सामान," बूढ़े मदारी ने बड़बड़ाकर कहा। "काठ का उल्लू... आर्तो, चल इधर!"

"ऐ, मदारी, रुक," सुनहरे चश्मे वाले साहब ने रोब से कहा। "तू ज़्यादा बन मत, समझा? तेरा कुत्ता दस रूबल से ज़्यादा का नहीं है, और वह भी घाल में तेरे साथ... गधे, सोच तो, तुझे कितने मिल रहे हैं!"

"बहुत-बहुत शुक्रिया, हज़ूर माई-बाप का, पर..." बूढ़े ने कांखते हुए पिटारी पीठ पर चढ़ा ली। "पर यह कोई बात नहीं कि बेच दें। आप कहीं और कोई कुत्ता ढूंढ लीजिए... मौज से रहिए... सेर्गेइ, चल आगे!"

"पासपोर्ट है तेरे पास?" सहसा डाक्टर ने चिल्लाकर धमकी दी। "जानता हूं मैं तुम हरामज़ादों को!"

"जमादार! सेम्योन! भगाओ इन्हें!" गुस्से से लाल-पीली होती महिला चीखी।

गुलाबी कमीज़ पहने मनहूस जमादार डरावनी शक्ल बनाता मदारी के पास आया। बरामदे में हंगामा मच गया: त्रिल्ली गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहा था, उसकी मां कराह रही थी, धाय और छोटी धाय जल्दी-जल्दी बोल-चीख रही थीं, क्रोधित ततैये की तरह नीची आवाज़ में डाक्टर भिनभिना रहा था। पर बाबा और सेर्गेइ को यह देखने की फ़ुरसत न थी कि इस सब का अंत क्या होगा। आगे-आगे खासा डर गया आर्तो और उसके पीछे प्रायः दौड़ते हुए बाबा और सेर्गेइ फाटक की ओर बढ़ रहे थे। उनके पीछे-पीछे जमादार जा रहा था, बाबा की पिटारी पर धक्के दे रहा था और धमकियां दे रहा था:

"घूमते-फिरते हैं, आवारा कहीं के! शुक्र मना बुढ़ऊ कि झापड़ रसीद नहीं किया। फिर आएगा, तो कोई लिहाज़ नहीं करूंगा, सिकाई कर दूंगा और हवलदार के पास घसीट ले जाऊंगा। हरामखोर!"

बड़ी देर तक बूढ़ा और लड़का चुपचाप चलते रहे, फिर सहसा, मानो एक ही फ़ैसले से, दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा और हंस पड़े: पहले सेर्गेइ खिलखिलाकर हंसा और फिर उसे देखते हुए कुछ सकपकाकर मदारी भी मुस्कराया।

"क्यों बाबा? तुम्हें सब पता है?" सेर्गेइ ने चुटकी ली।

"हां, भैया। आज तो हम धोखा खा गए," बूढ़े मदारी ने सिर हिलाया। "कैसा कमबख़त छोकरा है!.. कैसे इसे ऐसा पाला है? ज़रा देखो तो: पच्चीस लोग इसके इर्द-गिर्द नाच रहे हैं। अगर मेरा बस चले, तो मैं इसे सीधा कर दूं। कहता है कुत्ता दे दो! क्या कहने हैं! कल को कहेगा आसमान से चांद ला दो, तो क्या चांद ला दोगे? इधर आ आर्तो, मेरे कुत्ते! कैसा दिन चढ़ा है आज! पूछो मत!"

"हां, कितना बढ़िया दिन है!" सेर्गेइ बाबा की हंसी उड़ाता जा रहा था। "एक मेम साहब ने कपड़े दिए, दूसरी ने पूरा रूबल दे दिया। हां, बाबा, तुम तो सब कुछ जानते हो!"

"तू चुप रह, छुटकू," बूढ़े ने भी मज़ाक़ में जवाब दिया। "जमादार से डरके कैसे भागा था, याद है? मैं तो सोच रहा था कि तेरे साथ चल ही नहीं पाऊंगा। बड़ा गुस्सैल है यह जमादार।"

पार्क से बाहर आकर मदारी और उसके साथी तेज़ ढलान वाली रोड़ीदार पगडंडी पर नीचे समुद्र की ओर उतर गए। यहां पहाड़ियों ने थोड़े पीछे हटकर एक छोटे से मैदान के लिए जगह बना दी थी। मैदान ज्वार से घिसे पत्थरों से भरा हुआ था। अब यहां समुद्र की लहरों की हल्की छपछप हो रही थी। किनारे से कोई दो फ़र्लांग दूर सूंसें पानी में कलाबाज़ियां खा रही थीं, पल भर को उनकी गोल, मोटी पीठें नज़र आ जातीं। दूर-क्षितिज के पास जहां समुद्र की आसमानी रेशमी चादर पर गहरी नीली मखमली किनारी लगी दिखती थी, धूप में मछेरों की नावों के हल्के गुलाबी से पाल निश्चल खड़े थे।

"बाबा, यहीं नहाएंगे," सेर्गेइ ने कहा। उसने चलते-चलते ही, कभी एक पैर और कभी दूसरे पैर पर उछलते हुए पतलून उतार ली थी। "लाओ, बाजा उतरवा दूं।"

उसने जल्दी से कपड़े उतारे, अपने नंगे, धूप से संवलाए बदन पर चपत मारे और पानी में जा कूदा। उसके चारों ओर झाग उठने लगी।

बाबा आराम से कपड़े उतार रहा था। माथे पर हाथ रखकर आंखों को धूप से बचाते हुए और आंखें सिकोड़ते हुए वह स्नेह भरी मुस्कान के साथ सेर्गेइ को देख रहा था।

"लड़का अच्छा बन रहा है," बूढ़ा मदारी सोच रहा था। "है तो हड़ियल – सारी पसलियां दिख रही हैं, पर काठी मज़बूत होगी।"

"ऐ, सेर्गेइ! ज़्यादा दूर मत जा, नहीं तो समुद्री सूअर खींच ले जाएगा।"

"मैं उसकी दुम दबा दूंगा!" सेर्गेइ दूर से चिल्लाया।

बाबा काफ़ी देर तक धूप में खड़ा रहा, अपनी बगलें टटोलता रहा। बड़ी सावधानी से वह पानी में घुसा और डुबकी लगाने से पहले बड़े जतन से अपनी गंजी, लाल टांट और अंदर को धंसी बगलें गीली कीं। उसका शरीर पीला, थलथला और अशक्त था, टांगें बेहद पतली थीं, पीठ पर पखौरे उभरे हुए थे और बरसों तक पिटारी ढोने से वह कुबड़ा गई थी।

"बाबा, बाबा, देखो!" सेर्गेइ चिल्लाया।

उसने सिर के ऊपर से टांगें निकालकर पानी में कलाबाज़ी लगाई। बाबा कमर तक पानी में घुस गया था और मज़े से कांखता हुआ उठ-बैठ रहा था। वह चिंतित स्वर में चिल्लाया:

"अरे, अरे, शैतानी मत कर। देख, तेरी ख़बर लूंगा!"

आर्तो किनारे पर दौड़ता हुआ ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहा था। वह इस बात से परेशान था कि लड़का इतनी दूर निकल गया है। "काहे को बहादुरी दिखाता है?" कुत्ता घबरा रहा था। "ज़मीन तो है, चलो यहीं पर। कोई परेशानी न हो।"

वह ख़ुद भी पेट तक पानी में घुसा था और दो-तीन बार उसे जीभ से चाटा था। पर खारा पानी उसे अच्छा न लगा। किनारे की रोड़ी पर सरसराती लहरों से उसे डर लगता था। वह तट पर निकल आया और फिर से सेर्गेइ पर भौंकने लगा। "क्यों ये बेहूदा हरकतें कर रहा है? यहीं किनारे पर बूढ़े के साथ बैठा रहता। ओफ़्फ़, कितना परेशान करता है यह छोकरा!"

"ऐ, सेर्गेइ, चल अब बाहर निकल, बहुत हो गया," बूढ़े ने आवाज़ दी।

"अभी आया, बाबा। देखो इंजन आ रहा है। छुक-छुक-छुक!"

आखिर वह तट पर आ गया, पर कपड़े पहनने से पहले उसने आर्तो को उठाया और उसके साथ समुद्र में लौटकर उसे दूर फेंक दिया। कुत्ता तुरंत ही वापस तैरने लगा। उसकी थूथनी और ऊपर उठ आए कान ही बस पानी के बाहर थे। वह ज़ोर-ज़ोर से और नाराज़ सा फुफकार रहा था। बाहर आकर उसने सारा बदन झकझोरा, बूढ़े और सेर्गेइ पर ढेर सारी छींटें पड़ीं।

"अरे सेर्गेइ, देख तो, यह फिर हमारी ओर चला आ रहा है?" बूढ़े ने ग़ौर से ऊपर पहाड़ी की ओर देखते हुए कहा।

काले गोलों वाली गुलाबी कमीज़ पहने वही मनहूस जमादार, जिसने पंद्रह मिनट पहले उन्हें दाचा से भगाया था, ज़ोर-ज़ोर से कुछ चिल्लाता हुआ और हाथ हिलाता पगडंडी पर नीचे उतर रहा था।

"क्या चाहिए इसे?" हैरान-परेशान बाबा ने पूछा।

(४)

भारी-भरकम जमादार बेढब सा नीचे दौड़ता आ रहा था और चिल्लाए जा रहा था। उसकी कमीज़ की बांहें हवा में लहरा रही थीं और दामन पाल की तरह फूल गया था।

"अरे, ओ!.. ठहरो तो!"

"तेरा सवा सत्यानास हो," मदारी गुस्से में बड़बड़ाया। "फिर आर्तो के पीछे आया है।"

"चलो, बाबा, इसकी खबर लेते हैं!" सेर्गेइ ने बड़ी बहादुरी से कहा।

"जा, पीछा छोड़... उफ़्फ़, क्या लोग हैं। हे भगवान!"

"ऐ, सुनो तुम..." हांफता हुआ जमादार दूर से ही बोलने लगा। "बेच दो न कुत्ते को। छोटा मालिक बस में ही नहीं आता। रोए जा रहा है। 'कुत्ता ला दो, कुत्ता ला दो...' मालकिन ने कहा है, जितने में भी दें, ले आ।"

"बड़ी बेवकूफ़ है तेरी मालकिन भी," बूढ़ा सहसा गुस्से में आ गया। यहां समुद्र तट पर उसे ऐसा कोई डर न था, वह पराये दाचा में तो था नहीं। "और फिर वह मेरी मालकिन कैसी? मालकिन होगी तेरी, मेरे ठेंगे से ... मैं तुझे हाथ जोड़ता हूं, जा तू यहां से, भगवान के वास्ते ... हमारा पिंड छोड़।"

पर जमादार मान नहीं रहा था। वह बूढ़े के पास ही पत्थरों पर बैठ गया और अपने आगे बेढब सी उंगलियां नचाते हुए कहने लगा:

"समझता क्यों नहीं, बेवक़ूफ़ ..."

"बेवक़ूफ़ होगा तू," बूढ़े ने चटाक से जवाब दिया।

"ओहो, ठहर ना ... यह बात नहीं ... कैसा अड़ियल टट्टू है तू ... ज़रा सोच तो: क्या है यह कुत्ता? कहीं और पिल्ला ढूंढ़ लिया, दो टांगों पर खड़ा होना सिखा दिया, बस फिर से कुत्ता तैयार। ठीक है कि नहीं? हैं?"

बाबा बड़े ध्यान से पतलून पर पेटी बांध रहा था। जमादार के आग्रहपूर्ण प्रश्नों का उसने बड़ी बेफ़िक्री से जवाब दिया:

"बके जा, बके जा ... मैं एक बार में ही तेरी बातों का जवाब दे दूंगा।"

"यहां, भाई मेरे, तुझे एकदम मोटी रकम मिल रही है," जमादार जोश में आ रहा था। "दो सौ, नहीं तो पूरे तीन सौ ही! हां, कुछ हिस्सा मेरा भी – इतनी मगज़पच्ची कर रहा हूं तेरे साथ ... ज़रा सोच तो: तीन सौ रूबल! अरे ऐसी रकम से तो तू दुकान खोल लेगा।"

यों बोलते हुए जमादार ने जेब से सलामी का एक टुकड़ा निकाला और कुत्ते की ओर फेंका। आर्तो हवा में ही उसे पकड़कर एकबारगी ही निगल गया और दुम हिलाने लगा।

"कह लिया जो कहना था?" बाबा ने पूछा।

"कहने को है ही क्या। कुत्ता दे दे और सौदा तय!"

"अच्छा-आ, जी," बाबा ने व्यंग्य के साथ कहा। "तो कुत्ते को बेच दें?"

"साफ़ बात है, बेच दो। और क्या चाहिए तुझे? सबसे बड़ी बात तो हमारा छोटा मालिक ऐसा ढीठ है। कुछ मन में आ जाए – बस सारा घर सिर पर उठा लेगा। दे दो, दे दो – और कोई बात ही नहीं। बाप के बिना यह हाल है ... बाप घर पर हो तो ... हे भगवान! .. मालिक हमारा इंजीनियर है,

सुना होगा, अबाल्यानिनव सा'ब? सारे रूस में रेलें बिछाता है। लखपति है! लौंडा एक ही है। बस इसीलिए, सिरचढ़ा है। जीता-जागता टट्टू चाहिए – लो जी टट्टू आ गया। नाव चाहिए – लो सचमुच की नाव आ गई। किसी बात में कहीं इन्कार ही नहीं ..."

"और चांद?"

"क्या मतलब?"

"मैंने कहा, चांद कभी नहीं मांगा उसने?"

"वाह, तू भी क्या बात करता है – चांद!" जमादार सकपका गया। "अच्छा तो भले आदमी सौदा पक्का?"

बाबा ने इस बीच में अपना मटमैला कोट पहन लिया था। अपनी झुकी कमर के साथ जहां तक हो सकता था, वह तनकर खड़ा हो गया।

"मैं तुझे एक बात कहता हूं," बाबा ख़ासे गम्भीर भाव से बोलने लगा। "मान लो, तेरे कोई भाई हो या दोस्त, जो कि एकदम बचपन से ही ... ऐ, भई, तू बेकार में कुत्ते को सलामी मत खिलाए जा ... ख़ुद खा ले ... इससे वह परचनेवाला नहीं। हां तो, अगर तेरा कोई एकदम पक्का, मतबल सच्चा दोस्त हो ... बचपन से ... तो तू उसे कितने में बेच देगा?"

"तूने भी ख़ूब मुक़ाबला किया!"

"बस मुक़ाबला ही है। तू यही कह दे, अपने मालिक से, जो रेलें बनाता है," बाबा की आवाज़ तीखी हो गई। "यही कह देना कि जो कुछ ख़रीदा जा सकता है, वह सब कुछ बिकता नहीं है। समझा? तू ख़ामख़ाह कुत्ते को सहला मत, इससे कुछ नहीं होने का। इधर आ बे आर्तो, कुत्ते की औलाद! तेरी ऐसी की ... सेर्गेइ, चल सामान उठा।"

"गधा कहीं का," आख़िर जमादार से न रहा गया।

"गधा हूं, तो अपना बोझा ढोने को। तू नीच है, हरामख़ोर, नमकहराम, कमीना!" बूढ़े मदारी ने गाली दी। "अपनी मालकिन को देखेगा, कह दियो, लो जी, प्यार से हमारा लंबा सलाम। उठा दरी, सेर्गेइ! ओह, मेरी पीठ! चलो।"

"अच्छा-आ, तो यह बात है!" जमादार ने बड़े अर्थपूर्ण ढंग से कहा।

"बस, यही संभाल लो!" बूढ़े ने भी पलटकर जवाब दिया।

मदारी और उसके साथी फिर से समुद्र के किनारे-किनारे, उसी रास्ते से ऊपर चल दिए। सेर्गेइ ने यों ही सिर पीछे घुमाया और देखा कि जमादार उन पर नज़रें गड़ाए हुए है। वह विचारमग्न सा और खिन्न लग रहा था। आंखों पर उतर आई टोपी के पीछे टांड पर उलझे लाल बालों को वह पूरे पंजे से खुजला रहा था।

(५)

बूढ़े मदारी ने बरसों पहले से मिस्खोर और अलूप्का के बीच एक जगह ढूंढ़ रखी थी – निचली सड़क से नीचे की ओर, जहां बड़े मज़े से खाना खाया जा सकता था। वह अपने साथियों को वहीं ले गया। कलकल करते गंदले पहाड़ी झरने पर बने पुल से थोड़ी दूर टेढ़े-मेढ़े बलूतों और हेज़ल की घनी झाड़ियों की छाया में ज़मीन से एक सोता फूटता था। उससे ज़मीन में थोड़ा सा गहरा गोल गड्ढा बन गया था, उसमें से पानी की पतली सी धार घास के बीच चांदी सी चमकती हुई झरने में जा गिरती थी। इस सोते के पास सुबह-शाम तुर्कों को देखा जा सकता था, जो यहां पानी पीते थे और नमाज़ पढ़ते थे।

"ओह, हमारे पाप बड़े भारी, और झोला खाली," हेज़ल की झाड़ी की शीतल छाया में बैठते हुए बूढ़े मदारी ने कहा। "आ जा, सेर्गेइ। हे भगवान, तेरा आसरा है!"

उसने किरमिच के झोले में से डबल रोटी, दसेक लाल-लाल टमाटर, मल्दावियाई पनीर "ब्रीन्ज़ा" का टुकड़ा और ज़ैतन के तेल की शीशी निकाली। एक कपड़े में, जिसे साफ़ तो नहीं कहा जा सकता था, उसने नमक की पोटली बांध रखी थी। खाना खाने से पहले बूढ़ा काफ़ी देर तक सलीब के निशान बनाता रहा और कुछ बुदबुदाता रहा। फिर उसने रोटी के तीन असमान टुकड़े किए: सबसे बड़ा टुकड़ा उसने सेर्गेइ को दिया (बच्चा बढ़ रहा है, उसे खाना चाहिए), दूसरा, उससे कुछ छोटा टुकड़ा कुत्ते के लिए रखा और सबसे छोटा खुद लिया।

"हे परमपिता परमेश्वर। सबके नेत्र तुझ पर लगे, प्रभु," वह बुदबुदाता जा रहा था और हिस्से बांटता हुआ उन पर शीशी से तेल डाल रहा था। "ले, खा ले, सेर्गेइ!"

बिना किसी जल्दबाज़ी के, धीरे-धीरे, जैसे कि सच्चे मेहनतकश खाते हैं, तीनों अपना सीधा-सादा भोजन करने लगे। बस तीन जोड़े जबड़ों के चलने की आवाज़ आ रही थी। आर्तो अपना हिस्सा एक ओर को बैठा खा रहा था। पेट के बल लेटकर उसने रोटी अगले पंजों से दबा ली थी। बाबा और सेर्गेइ बारी-बारी से पके टमाटरों को नमक में छुआते थे। टमाटरों से उनके होंठों और हाथों पर खून सा लाल रस बह रहा था। टमाटर खाकर ऊपर से वे पनीर और रोटी मुंह में डालते। भरपेट खाना खाकर उन्होंने जी भरकर पानी पिया। सोते की धार तले मग रखके उसमें वे पानी भर रहे थे। जल निर्मल, अत्यंत स्वादिष्ट और इतना ठंडा था कि उससे मग भी बाहर से गीला हो गया। दिन की तपस और लंबे रास्ते से मदारी और लड़का थक गए थे। पौ फटते ही वे निकल पड़े थे। बाबा की आंखें मुंदी जा रही थीं। सेर्गेइ जम्हाइयां ले रहा था, अंगड़ाइयां भर रहा था।

"क्यों, भैया, पल भर को लेट लें, झपकी ले लें?" बाबा ने पूछा। "लाओ, थोड़ा और पानी पी लूं। वाह, कितना अच्छा है," होंठो से मग हटाते हुए और भारी सांस लेते हुए बाबा ने कहा। उसकी मूंछों और दाढ़ी पर उजली बूंदें ढरक रही थीं। "अगर मैं राजा होता, तो बस यह पानी ही पीता रहता ... सुबह से गई रात तक! आर्तो, इधर आ! लो, भगवान ने पेट भरा, किसी ने नहीं देखा, जिसने देखा, उसकी नज़र नहीं लगी ... ओह-ओह-ओह!"

बूढ़ा और लड़का सिर तले अपना-अपना पुराना कोट रखकर पास-पास ही घास पर लेट गए। उनके सिरों के ऊपर घने, छतनार बलूतों की पत्तियां सरसरा रही थीं। उनके बीच-बीच में स्वच्छ आकाश की नीलिमा चमक रही थी। एक पत्थर से दूसरे पर बहता झरना ऐसी मीठी कलकल कर रहा था, मानो लोरी सुना रहा हो। बाबा कुछ देर तक कुलबुलाता, कांखता रहा, कुछ कहता रहा, पर सेर्गेइ को लग रहा था कि उसकी आवाज़ कहीं दूर, रहस्यमय लोक से आ रही है और शब्द परी कथाओं जैसे अनबूझ हैं।

"सबसे पहले तेरे लिए जोड़ा खरीदूंगा: गुलाबी, सुनहरी सलमे-सितारों वाला... जूतियां भी गुलाबी, रेशमी... कीयेव, खार्कोव में या फिर ओदेस्सा में – पता है वहां कैसे-कैसे सरकस हैं! बत्तियां अनगिनत... बिजली की! लोग पांच हज़ार तो होते ही होंगे... या शायद और भी ज़्यादा... मुझे क्या पता? तेरा कोई नया नाम रखेंगे – इतालवी नाम। येस्तिफ़ेयेव या फिर लदीश्किन भी कोई नाम है? बकवास है निरी – कोई रंग ही नहीं। हम इश्तहारों में तेरा नाम लिखेंगे अन्टोनियो या फिर ऐनरिको, यह भी अच्छा है, या अल्फ़ोंज़ो..."

इसके आगे लड़के को कुछ सुनाई नहीं दिया। मीठी नींद में उसका सारा शरीर जकड़ सा गया, निश्शक्त हो गया। बाबा भी सो गया, सेर्गेइ के लिए सरकस में उज्ज्वल भविष्य की उसकी कल्पनाओं का तांता सहसा टूट गया। एक बार नींद में उसे लगा कि आर्तो किसी पर गुर्रा रहा है। पल भर को उसके नींद से भारी सिर में गुलाबी कमीज़ वाले जमादार का अर्धचेतन और चिंताजनक विचार कौंधा, पर नींद, थकावट और गर्मी से वह ऐसा निढाल था कि उठ नहीं सकता था, आंखें मूंदे-मूंदे ही, अलसाई आवाज़ में उसने कुत्ते को पुकारा:

"आर्तो... किधर जा रहा है? तेरी ऐसी... आवारा कहीं का!"

किंतु उसी क्षण उसके विचार गडमड हो गए, भारी निराकार स्वप्नों में बदल गए।

सेर्गेइ की आवाज़ से बाबा की आंख खुली। लड़का झरने के दूसरी ओर आगे-पीछे दौड़ रहा था, तेज़-तेज़ सीटी बजा रहा था, बेचैन और डरा-डरा सा ज़ोर से चिल्ला रहा था:

"आर्तो! इधर आ! पुच-पुच-पुच! आर्तो, चल इधर!"

"अरे, चिल्ला क्यों रहा है?" सुन्न हो गई बांह को मुश्किल से सीधा करते हुए बाबा ने पूछा।

"क्यों? क्यों? इधर हम सोते रहे, उधर कुत्ता ग़ायब हो गया," सेर्गेइ ने झुंझलाकर जवाब दिया।

उसने ज़ोर से सीटी बजाई और फिर से पुकारा:

"आर्तो-ओ!"

"बेकार की बातें करता है तू!.. लौट आएगा," बाबा ने कहा। पर

तुरंत ही खड़ा हो गया और उनींदी, गुस्से भरी आवाज़ में कुत्ते को पुकारा:

"आर्तो, इधर आ, कुत्ते की औलाद!"

जल्दी-जल्दी, छोटे-छोटे, डगमगाते क़दम भरते हुए उसने पुल पार किया, सड़क पर बढ़ गया। वह कुत्ते को पुकारता जा रहा था। सामने दो फ़र्लांग तक सपाट, चमकीला सफ़ेद रास्ता दिख रहा था, पर उस पर न कोई आकृति थी, न कोई परछाईं।

"आर्तो! आर्तो रे!" बूढ़ा रुआंसी आवाज़ में चिल्लाया।

सहसा वह रुक गया, ज़मीन पर झुक गया और पैरों के बल बैठ गया।

"अच्छा-आ! यह बात है!" बुझी-बुझी आवाज़ में बूढ़ा बोला। "सेर्गेइ! इधर आ तो, बच्चे!"

"क्या है?" बूढ़े के पास आते हुए लड़के ने रुखाई से कहा। "बीता दिन मिल गया क्या?"

"सेर्गेइ... देख तो यह क्या है? ...यह, यह क्या है? ...समझा?" बूढ़े के मुंह से शब्द मुश्किल से निकल रहे थे।

वह खोई-खोई, दयनीय नज़रों से लड़के की ओर देख रहा था और ज़मीन की ओर इशारा कर रहा उसका हाथ इधर-उधर झूल रहा था।

सड़क पर सफ़ेद धूल में सलामी का काफ़ी बड़ा अधखाया टुकड़ा पड़ा हुआ था और उसके चारों ओर कुत्ते के पंजों के निशान थे।

"परचा ले गया, कमीना!" भयभीत स्वर में बाबा फुसफुसाया। वह पहले की ही भांति पंजों के बल बैठा हुआ था। "वही होगा, और कोई नहीं, साफ़ बात है... याद है, वहां समुद्र किनारे वह सलामी खिला रहा था।"

"साफ़ बात है," कटु स्वर में सेर्गेइ ने दोहराया।

बूढ़े की फटी-फटी आंखों में आंसू भर आए और वे जल्दी-जल्दी झपकने लगीं। उसने हाथों में मुंह ढांप लिया।

"अब हम क्या करें, सेर्गेइ? हैं? क्या करें अब?" बूढ़ा पूछ रहा था। असहाय सा सिसकता हुआ वह आगे-पीछे डोल रहा था।

"क्या करें, क्या करें!" सेर्गेइ ने गुस्से से उसकी नकल उतारी। "उठो बाबा, चलो चलें!"

"चल, चलें," बूढ़े ने ज़मीन से उठते हुए उदास स्वर में उसकी बात मानी। "हां, सेर्गेइ, चल चलें!"

सेर्गेइ धीरज खो बैठा, वह बूढ़े मदारी पर यों चिल्लाया मानो वह कोई बच्चा हो:

"अच्छा, यह बेवकूफ़ी बंद करो! यह कहां का क़ानून है कि पराये कुत्तों को परचा ले गए? क्या आंखें फाड़-फाड़कर देख रहे हो? ग़लत कहा क्या मैंने? सीधे जाकर कह देंगे: 'कुत्ता वापिस करो!' नहीं देंगे, तो हवलदार के पास चले जाएंगे। सीधी बात है।"

"हां ... हवलदार के पास ... हां, वो तो ठीक है," निरर्थक, कटु मुस्कान के साथ बाबा कहता जा रहा था। पर उसकी आंखों में संकोच था। "हवलदार के पास ... हां ... पर वो ... वह बात नहीं बनती, सेर्गेइ ... कि हवलदार के पास जाएं ..."

"बात क्यों नहीं बनती? क़ानून सबके लिए एक है। क्यों हम उनके आगे दुम हिलाएं?" लड़का अधीर हो रहा था।

"सेर्गेइ, तू ... भैया, तू नाराज़ मत हो। कुत्ता तो वे लौटाने से रहे।" बाबा ने रहस्यमय ढंग से आवाज़ नीची कर ली। "मुझे वह पासपरट का डर है। याद है वो सा'ब क्या कह रहा था? पूछता था: 'पासपरट है तेरे पास?' हां, भैया, यह बात है। और मेरा पासपरट," भयभीत चेहरे के साथ हौले से फुसफुसाते हुए बाबा ने कहा: "वो बेगाना है।"

"बेगाना कैसे?"

"यही तो बात है कि बेगाना है। मेरा अपना तो तगनरोग शहर में खो गया था, कौन जाने किसी ने चुरा ही लिया हो। दो साल तक मैं भटकता रहा था: छिप-छिपकर रहता था, घूस देता था, कई बार अर्ज़ियां लिखीं ... आखिर देखा कि जीना ही हराम हो गया, खरगोश की तरह हर किसी से डर लगता है। दिन-रात चैन नहीं। तभी ओदेस्सा में रैनबसेरे में एक यूनानी मिला। वह बोला यह तो कोई काम ही नहीं, चुटकी बजाते हो जाएगा। बोला, ला पच्चीस रूबल इधर धर, मैं तुझे पासपरट ला दूंगा। मैं सोच में पड़ गया, फिर मन में आया जो होगा, सो होगा। बोला, ला दे दे। बस, भैया, तभी से मैं बेगाने पासपरट के साथ रह रहा हूं।"

"ओह, बाबा, बाबा!" रुलाई रोकते हुए सेर्गेइ ने गहरी सांस ली। "कुत्ते का अफ़सोस है... बड़ा ही प्यारा कुत्ता था।"

"सेर्गेइ, मेरे बच्चे!" बूढ़े ने कांपते हाथ उसकी ओर बढ़ाए। "अगर मेरे पास सचमुच का पासपरट होता, तो मैं क्या किसी की परवाह करता, जाकर टेंटुआ पकड़ लेता!.. 'यह क्या बात है? क्या हक़ है तुम्हें दूसरों के कुत्ते चुराने का? ऐसा कौन सा क़ानून है?' पर अब भैया हम कुछ नहीं कर सकते। मैं पुलिस में जाऊं, जो सबसे पहले कहेंगे: 'ला पासपरट निकाल! अच्छा तो तू समारा का मर्तीन लदीश्किन है?' 'जी, हज़ूर'। पर मैं तो भैया लदीश्किन हूं ही नहीं, मैं तो हूं इवान दूद्किन। और यह लदीश्किन कौन है, भगवान जाने। मुझे क्या पता कि वह कोई चोर-उचक्का है या साइबेरिया से क़ैद से भागा भगोड़ा है? या शायद हत्यारा ही हो? नहीं, सेर्गेइ, हम कुछ नहीं कर सकते... कुछ भी नहीं..."

बाबा का गला रुंध आया। आंसू फिर से धूप से काली पड़ी गहरी झुर्रियों में बहने लगे। सेर्गेइ असहाय, दुर्बल बूढ़े की बातें चुपचाप सुन रहा था, उसकी भौंहें सिकुड़ी हुई थीं, उत्तेजना से वह पीला पड़ गया था। अब वह बूढ़े की बगलों में हाथ डालकर उसे उठाने लगा।

"चलो, बाबा," उसके स्वर में आदेश भी था और स्नेह भी। "भाड़ में जाए पासपरट, चलो चलें! यहां सड़क पर थोड़े ही रात काटेंगे।"

"मेरे बच्चे, मेरे प्यारे," बूढ़ा कह रहा था। उसका सारा शरीर कांप रहा था। "बड़ा ही मज़ेदार था कुत्ता... हमारा आर्तो... दूसरा ऐसा कुत्ता नहीं मिलेगा हमें..."

"अच्छा, अच्छा... उठो," सेर्गेइ कह रहा था। "लाओ मैं धूल झाड़ दूं। तुम तो बाबा बिल्कुल ही हिम्मत हार बैठे।"

उस दिन फिर उन्होंने काम नहीं किया। अपनी छोटी उम्र के बावजूद सेर्गेइ अच्छी तरह समझता था कि यह भयानक शब्द "पासपरट" ग़रीबों की ज़िंदगी में क्या मानी रखता है। इसलिए उसने न तो आर्तो को ढूंढने, न हवलदार के पास जाने, न ही कोई और क़दम उठाने पर ज़ोर दिया। हां, बाबा के साथ रैनबसेरे तक जाते हुए उसके चेहरे पर एक नया, एकाग्रता और

हठधर्मी का भाव बना रहा, मानो उसने मन ही मन कोई गम्भीर और बड़ी योजना बना ली हो।

एक दूसरे को कुछ कहे बिना, परंतु प्रत्यक्षतः एक ही इच्छा से प्रेरित होकर उन्होंने काफ़ी लंबा चक्कर लगाया, ताकि एक बार फिर 'दोस्ती' दाचा के सामने से गुज़र सकें। वे फाटक के सामने पल भर को रुके, इस धुंधली सी आशा के साथ कि शायद आर्तो को देख पाएं या दूर से उसकी आवाज़ ही सुनाई दे जाए।

लेकिन भव्य दाचा का लोहे का फाटक बंद था और छायादार बाग़ में उदास, सुघड़ सरू वृक्षों तले दम्भमय, अविचलित, सुगंध भरा सन्नाटा छाया हुआ था।

"सा – ह – ब – ज़ादे!" फुफकारती आवाज़ में बूढ़े ने कहा। इस एक शब्द में उसने अपने हृदय की सारी कटुता उंडेल दी।

"छोड़ो बाबा, चलो अब," लड़के ने सख्ती से कहा और मदारी की बांह खींची।

"सेर्गेइ, शायद आर्तो भाग जाए?" बाबा ने फिर सिसकी भरी। "हैं? क्या ख्याल है तेरा, मुन्ना?"

पर लड़के ने बाबा को कुछ जवाब नहीं दिया। वह दृढ़तापूर्वक, लंबे-लंबे क़दम भरता चला जा रहा था। उसकी आंखें ज़मीन में गड़ी हुई और पतली भौंहें सिकुड़ी हुई थीं।

(६)

चुप्पी साधे हुए ही वे अलूप्का पहुंच गए। बाबा सारे रास्ते कांखता और आहें भरता रहा था। सेर्गेइ के चेहरे पर कटुता और दृढ़ संकल्प का भाव बना हुआ था। एक तुर्क के गंदे कहवेखाने में, जिसका नाम बड़ा शानदार था 'इल्दीज़' यानी 'सितारा', वे रात काटने को ठहरे। उनके साथ कुछ यूनानी राजगीर, तुर्क बेलदार, दिहाड़ी करनेवाले रूसी मज़दूर और कुछ संदेहास्पद आवारा लोग भी, जो बड़ी संख्या में रूस के दक्षिण में घूमते-फिरते हैं, वहां रात काट

रहे थे। जैसे ही निश्चित समय पर कहवाख़ाना बंद हुआ, वे सब दीवारों के साथ लगी बेंचों पर और फ़र्श पर लेट गए। जो लोग कुछ अनुभवी थे उन्होंने सावधानी बरतते हुए अपनी जो कुछ भी कीमती चीज़ या कपड़ा-लत्ता था उसे सिर तले रख लिया।

रात आधी से ज़्यादा बीत चुकी थी। बाबा के बगल में फ़र्श पर लेटा सेर्गेइ हौले से उठा और ज़रा भी शोर न करने की कोशिश करते हुए कपड़े पहनने लगा। बड़ी-बड़ी खिड़कियों में से मंद-मंद चांदनी आ रही थी। तिरछी थरथराती किरणें फ़र्श पर फैल रही थीं, गठरी से सोए लोगों पर पड़ रही थीं। चांदनी में उनके चहरे दुखद और मृतकों से लगते थे।

"ऐ, चोकरे, किदर जाता है रात को?" दरवाज़े के पास कहवेख़ाने के मालिक जवान तुर्क इब्राहीम ने उनींदी आवाज़ में सेर्गेइ को टोका।

"जाने दे, काम है!" सेर्गेइ ने सख्ती से जवाब दिया। "उठ भी न, तुरक-मुरक!"

जम्हाइयां लेते, खुजलाते और जीभ से च-च करते इब्राहीम ने दरवाज़ा खोल दिया। तातार बाज़ार की संकरी गलियों में घनी, गहरी नीली परछाईं फैली हुई थी, सड़क दांतेदार बेल-बूटे से बनी लगती थी, परछाईं सामने के मकानों की दहलीज़ तक पहुंची हुई थी। सामने के घरों की नीची दीवारें चांदनी में चमक रही थीं। मुहल्ले के परे कहीं कुत्ते भौंक रहे थे। दूर, ऊपर की सड़क पर दौड़ते घोड़े की टापें सुनाई दे रही थीं।

हरे गुम्बद वाली सफ़ेद मस्जिद अंधेरे घने सरू वृक्षों के झुरमुट से घिरी हुई थी। उसे पार करके लड़का तेज़ ढलान वाली तंग गली से बड़ी सड़क पर उतर आया। ज़्यादा बोझा न हो, इसलिए सेर्गेइ नीचे के कपड़े पहने ही चला आया था। चांदनी उसकी पीठ पर पड़ रही थी और उसके आगे-आगे अजीब सी, छोटी परछाईं दौड़ रही थी। सड़क के दोनों ओर अंधेरी झाड़ियां थीं। कोई चिड़िया उनमें समान अंतराल से कोमल स्वर में चहक रही थी: "सोऊं!.. सोऊं!.." लगता था कि वह रात की नीरवता में किसी दुखद रहस्य को छिपाए हुए है और निश्शक्त सी नींद और थकावट के साथ संघर्ष कर रही है तथा धीमी-धीमी आवाज़ में, बिना किसी आशा के किसी से शिकायत कर रही

है : "सोऊं, सोऊं! ..." अंधेरी झाड़ियों और दूर के जंगल के नीले-नीले शिखरों के ऊपर आयपेत्री पर्वत के दो नुकीले सिरे आसमान को छूते लगते थे। वह सारा इतना हल्का-फुल्का लगता था, मानो चांदी लगे गत्ते का बना हो।

इस भव्य नीरवता में चलते हुए सेर्गेइ के मन में धुक-धुक हो रही थी, पर साथ ही सारे शरीर में एक मादक सी निडरता का संचार हो रहा था। एक मोड़ पर सहसा उसे समुद्र दिखा। असीम शांत सागर में तरंगें उठ रही थीं। क्षितिज से तट की ओर पतली सी, थरथराती रुपहली पट्टी बढ़ती, समुद्र के बीचोंबीच वह ओझल हो जाती, बस कहीं-कहीं ही झिलमिल होती, और फिर सहसा तट पर पिघली चांदी फैल जाती।

सेर्गेइ ज़रा भी आवाज़ किए बिना पार्क के छोटे से लकड़ी के गेट में से अंदर घुस गया। वहां घने पेड़ों तले बिल्कुल अंधेरा था। दूर से अथक झरने का कलकल सुनाई दे रहा था और उससे ठंडी, नम सांसें आ रही थीं। पुल की लकड़ियों पर पैरों की ठक-ठक हुई। पुल तले पानी काला और भयावह था। आख़िर वह लोहे का, लेस जैसे बेल-बूटों वाला फाटक भी आ गया। फाटक के दोनों ओर बेल लगी हुई थी। पेड़ों के झुरमुट से छनकर आती चांदनी फाटक के बेल-बूटों पर कहीं-कहीं चमक रही थी। फाटक के दूसरी ओर अंधेरा था और सन्नाटा, जो लगता था ज़रा सी आहट से ही भंग हो जाएगा।

कुछ क्षणों के लिए सेर्गेइ के मन में शंका घिर आई, उसे डर ही लगने लगा। लेकिन उसने अपनी इस कमज़ोरी पर क़ाबू कर लिया और बुदबुदाया :

"नहीं, जो भी हो, मैं चढ़ जाऊंगा।"

चढ़ना उसके लिए मुश्किल न था। फाटक के बेल-बूटे उसके चीमड़ हाथों और मज़बूत पांवों के लिए अच्छा सहारा थे। फाटक के ऊपर एक खंभे से दूसरे पर पत्थर की चौड़ी मेहराब बनी हुई थी। सेर्गेइ टटोलता-टटोलता उस पर चढ़ गया, फिर पेट के बल लेटे-लेटे उसने टांगें अंदर की ओर नीचे कर दीं और धीरे-धीरे सारा धड़ नीचे करने लगा, साथ ही वह पैरों से टेक टटोलता जा रहा था। इस तरह वह मेहराब के दूसरी ओर लटक गया, बस उंगलियों के सिरों से वह मेहराब को पकड़े हुए था, लेकिन उसके पैरों को कोई टेक नहीं

मिल रही थी। तब वह यह नहीं समझ सकता था कि मेहराब बाहर के मुक़ाबले अंदर की ओर ज़्यादा बड़ी है। उसकी बांहें सुन्न होती जा रही थीं और निश्शक्त हो गया शरीर भारी ; मन में भय समाता जा रहा था।

आख़िर वह और न सह सका। नुकीले किनारे पर जमी उसकी उंगलियां फिसल गईं और वह तेज़ी से नीचे गिरा।

उसने रोड़ी की सरसराहट सुनी और घुटनों में तेज़ दर्द महसूस किया। कुछ क्षण तक वह हाथों-पैरों के बल पड़ा रहा, गिरने से वह सुन्न हो गया था। उसे लग रहा था कि दाचा में अभी सब जाग जाएंगे, गुलाबी कमीज़ पहने जमादार दौड़ा आएगा, हंगामा मच जाएगा ... लेकिन पहले की ही भांति बाग़ में गहरा, दम्भमय सन्नाटा छाया हुआ था। बस, सारे बाग़ में अजीब सी सायं-सायं हो रही थी।

"ओह, यह तो मेरे कानों में शोर हो रहा है!" सेर्गेइ आख़िर समझ गया। वह खड़ा हो गया। सब कुछ भयावह, रहस्यमय और अति सुंदर था, सुगंधित स्वप्न लोक सा। अंधेरे में मुश्किल से दिख रहे फूल हौले-हौले डोल रहे थे, मानो एक दूसरे के कान में कुछ कह रहे थे, चुपके-चुपके देख रहे थे और अस्पष्ट सी चिंता से सिर हिला रहे थे। अंधेरे, सुघड़, सुगंधित सरू धीरे-धीरे अपने नुकीले शिखर हिला रहे थे, मानो विचारमग्न से किसी बात का उलाहना दे रहे थे। झरने के पार झाड़ियों के झुरमुट में नन्ही सी थकी-मांदी चिड़िया नींद से जूझ रही थी और निराश, शिकायत करती सी दोहरा रही थी :

"सोऊं! .. सोऊं! .. सोऊं! .."

रात को पगडंडियों पर उलझी परछाइयों में सेर्गेइ इस जगह को पहचान ही न पाया। वह बड़ी देर तक सरसर करती रोड़ी पर भटकता रहा और आख़िर मकान के पास पहुंच गया।

जीवन में पहले कभी भी लड़के को ऐसे न लगा था कि वह इतना असहाय है, एकाकी है। उसे लग रहा था कि इस विशाल घर में निर्मम शत्रु छिपे बैठे हैं, जो दुष्टता भरी मुस्कान के साथ अंधेरी खिड़कियों में से छोटे से, दुर्बल बालक की हर गतिविधि पर नज़र लगाए हुए हैं। ये शत्रु चुपचाप अधीरतापूर्वक

किसी संकेत की, किसी के क्रोधपूर्ण, ज़ोरदार आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे।

"नहीं, घर में नहीं... घर में वह नहीं हो सकता!" सेर्गेइ मानो सपने में बुदबुदाया। "घर में वह किकियाएगा, तंग करेगा..."

उसने दाचा का चक्कर लगाया। पिछली ओर खुले अहाते में कुछ मामूली सी इमारतें थीं, शायद नौकरों के लिए। बड़े घर की ही भांति यहां भी किसी भी खिड़की में रोशनी नहीं थी; बस अंधेरे शीशों में चांदनी ही धूमिल सी चमक रही थी। "अब कभी भी यहां से नहीं निकल पाऊंगा। कभी भी नहीं!" गहरी उदासी के साथ सेर्गेइ ने सोचा। पल भर को बाबा, पुरानी पिटारी, कहवेखानों में रैनबसेरे, शीतल चश्मों के पास खाना – यह सब उसे याद हो आया। "अब यह सब कभी भी नहीं होगा," सेर्गेइ ने मन ही मन दुख से कहा। परंतु उसके विचारों में जितनी अधिक निराशा आती जा रही थी, उतना ही उसके मन में मर मिटने का शांत, कटु संकल्प बढ़ता जा रहा था।

सहसा उसके कानों से आह जैसी चिचियाहट टकराई। लड़का ठिठक गया, सांस थामे वह पंजों के बल तनकर खड़ा हो गया। फिर वही आवाज़ आई। लगता था वह उस तहख़ाने से आ रही थी, जिसके पास सेर्गेइ खड़ा था और जिसमें हवा आने-जाने के लिए छोटे-छोटे, चौकोर झरोखे बने हुए थे। किन्हीं फूलों पर पैर रखता हुआ सेर्गेइ दीवार के पास गया, एक झरोखे के पास मुंह ले जाकर सीटी बजाई। नीचे कहीं हौले से आहट हुई, पर उसी क्षण शांत हो गई।

"आर्तो! आर्तो!" सेर्गेइ ने कांपती आवाज़ में फुसफुसाकर पुकारा।

सारे बाग़ में ज़ोर-ज़ोर से भौंकने की आवाज गूंज उठी। इस आवाज़ में हर्ष भी था और शिकायत भी, कटुता भी और शारीरिक वेदना की भावना भी। सेर्गेइ को सुनाई दे रहा था कि अंधेरे तहख़ाने में कुत्ता पूरा ज़ोर लगाकर किसी चीज़ से छूटने की कोशिश कर रहा है।

"आर्तो, मेरे कुत्ते, आर्तो," रुआंसे स्वर में लड़का भी कहता जा रहा था।

"धत्, कमबख़्त कहीं का!" नीचे भोंडी आवाज़ में कोई चीखा।

तहख़ाने में कुछ टकराया। कुत्ता रुक-रुककर ज़ोर से हूंकने लगा।

"मार मत, मुए, मत मार कुत्ते को," पत्थर की दीवार को नाखूनों से खरोंचते हुए सेर्गेइ चीख उठा।

फिर जो कुछ हुआ, उसकी सेर्गेइ को धुंधली सी ही याद थी, मानो बुख़ार की बदहवासी में सब कुछ हुआ। तहख़ाने का दरवाज़ा खड़खड़ाकर खुल गया और जमादार दौड़ा-दौड़ा बाहर आया। वह केवल अंतरीय पहने था। नंगे पैर, दढ़ियल, चेहरे पर पड़ती चांदनी से पीला जमादार सेर्गेइ को राक्षस सा लगा।

"कौन है? कौन है?" बिजली की तरह उसकी आवाज़ कड़की। "पकड़ो-पकड़ो। चोर! चोर!"

उसी क्षण खुले दरवाज़े के अंधेरे में से उछलते सफ़ेद गोले की तरह आर्तो भौंकता हुआ बाहर आया। उसकी गरदन में रस्सी का टुकड़ा लटक रहा था।

लड़के को तो अब कुत्ते की होश न थी। जमादार की डरावनी आकृति से वह आतंकित हो उठा था, पैर जैसे काठ के हो गए, सारे शरीर को लकवा मार गया। पर ख़ुशक़िस्मती से यह जड़ता ज़्यादा देर न रही। सेर्गेइ ने अनजाने ही तीखी, लंबी चीख मारी और सिर पर पैर रखकर तहख़ाने से दूर भागा, रास्ता तो उसे दिख न रहा था, अनुमान से ही वह दौड़ चला।

वह हिरन की तरह जल्दी-जल्दी और ज़ोर से ज़मीन पर पांव मारता दौड़ता जा रहा था। टांगें उसकी सहसा इतनी मज़बूत हो गई थीं, मानो दो फ़ौलादी स्प्रिंग हों। उसके बगल में ही ख़ुशी से भौंकता आर्तो दौड़ रहा था। पीछे-पीछे रेत पर ज़ोर-ज़ोर से धमधमाता जमादार आ रहा था, ग़ुस्से में गालियां बक रहा था।

दौड़ते-दौड़ते ही सेर्गेइ फाटक तक जा पहुंचा, और क्षण भर में ही सोचकर नहीं, बल्कि अंतःप्रेरणा से ही यह समझ गया कि यहां रास्ता नहीं है। पत्थरों की दीवार और उसके साथ-साथ लगे सरू वृक्षों के बीच संकरा सा अंधेरा छेद था। कुछ सोचे-समझे बिना केवल डर की भावना से प्रेरित सेर्गेइ नीचे झुका और उसमें घुस गया, दीवार के साथ-साथ दौड़ने लगा। सरू की कांटेनुमा पत्तियां उसके चेहरे पर ज़ोर-ज़ोर से लग रही थीं। वह पेड़ों की जड़ों से टकरा जाता, गिरता, हाथ ख़ूनोंख़ून हो जाते, पर वह तुरंत ही उठ खड़ा होता,

पीड़ा तक न अनुभव करता और आगे दौड़ने लगता। वह मुड़कर दोहरा ही हो गया था, अपनी चीख तक उसे सुनाई न दे रही थी। आर्तो उसके पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

इस तरह वह एक ओर ऊंची दीवार और दूसरी ओर सरू वृक्षों की घनी कतार से बने गलियारे में दौड़ रहा था – असीम फंदे में फंसे, बौखलाए हुए छोटे से जानवर की तरह। उसका गला सूख गया और हर सांस के साथ छाती में हज़ारों सुइयां चुभती थीं। जमादार की धमधम कभी दाईं ओर से आती और कभी बाईं ओर से। बदहवास हो गया लड़का कभी आगे दौड़ता, कभी पीछे, कई बार वह गेट के सामने से गुज़रा, अंधेरे, तंग छेद में घुसा।

आख़िर सेर्गेइ निढाल हो गया। भयभीत मन में निराशा समाने लगी, वह हर तरह के ख़तरे की ओर से उदासीन सा होता जा रहा था। वह पेड़ तले बैठ गया, अपना थकावट से चूर-चूर शरीर तने से टिकाया और आंखें मूंद लीं। शत्रु के भारी क़दमों तले रेत की सरसर पास ही आती जा रही थी। आर्तो सेर्गेइ के घुटनों में थूथनी दुबकाकर हौले से किकिया रहा था।

लड़के से दो क़दम दूर टहनियों को हाथ से हटाने की आवाज़ आई। सेर्गेइ ने सहज ही आंखें ऊपर उठाईं और सहसा असीम हर्ष से भरपूर हो एक ही झटके में उछलकर खड़ा हो गया। अब कहीं उसने देखा था कि जिस जगह वह बैठा था, उसके सामने दीवार नीची ही थी, चार फ़ुट से ज़्यादा नहीं। हां, उसके ऊपर कांच लगा हुआ था, पर सेर्गेइ ने इसके बारे में नहीं सोचा। पलक झपकते ही उसने आर्तो को धड़ से उठाया और उसकी अगली टांगें दीवार पर रख दीं। चतुर कुत्ता तुरंत ही सब कुछ समझ गया। वह जल्दी से दीवार पर चढ़ गया, दुम हिलाने लगा और जीत के स्वर में भौंकने लगा।

उसके पीछे-पीछे ही सेर्गेइ भी दीवार पर चढ़ गया, ठीक उसी वक़्त जब सरू की टहनियों को हटाकर विशाल, काली आकृति प्रकट हुई। दो लचीले, फुर्तीले शरीर तेज़ी से सड़क पर कूद गए। उनके पीछे बादलों की गड़गड़ाहट की तरह गंदी-गंदी गालियां सुनाई दीं।

न जाने जमादार इन दो दोस्तों जैसा फुर्तीला नहीं था या वह बाग़ में दौड़ता-दौड़ता थक गया था, या उसे उम्मीद नहीं थी कि इन भगोड़ों को पकड़

पाएगा, जो भी हो उसने इनका पीछा नहीं किया। किंतु फिर भी वे दोनों काफ़ी देर तक दौड़ते चले गए, मुक्ति की खुशी से मानो उन्हें पर लग गए थे। कुत्ता शीघ्र ही निश्चिंत हो गया, पर सेर्गेइ अभी भी सहमा-सहमा पीछे मुड़कर देख रहा था। आर्तो उसके ऊपर कूद रहा था, खुशी से कान और रस्सी का टुकड़ा हिलाता हुआ वह एकदम उछलकर लड़के के ऐन होंठों पर ही अपनी जीभ फेर लेता।

सोते के पास ही, उसी जगह जहां दिन को उन्होंने बाबा के साथ रोटी खाई थी, लड़के की जान में जान आई। एकसाथ ही ठंडे सोते पर मुंह लगाकर कुत्ता और इन्सान बड़ी देर तक ताज़ा, स्वादिष्ट जल पीते रहे। वे एक दूसरे को धकेलते, पल भर को सिर ऊपर उठाकर सांस लेते, उनके होंठों से टप-टप बूंदें गिरतीं और फिर से वे सोते पर मुंह लगा लेते, हौके से पानी पीने लगते। आखिर जब और न पिया गया और वे आगे चल दिए, तो उनके पेटों में पानी की गुड़गुड़ हो रही थी। खतरा टल गया था, इस रात के सभी डरों का अब नामोनिशान न रहा था और वे दोनों खुशी-खुशी, मज़े से चांदनी में चमकती सड़क पर चले जा रहे थे। दोनों ओर की अंधेरी झाड़ियों से सुबह की ताज़गी और ओस से भीगी पत्तियों की मीठी गंध आ रही थी।

'इल्दीज़' कहवेखाने में इब्राहीम लड़के को उलाहना देते हुए बड़बड़ाया: "ऐ, चोकरे, कहां गूमता रहता है तू? बरी बुरी बात है..."

सेर्गेइ बाबा को जगाना नहीं चाहता था, पर उसकी जगह आर्तो ने ऐसा किया। फ़र्श पर गठरियों से पड़े शरीरों में उसने पल भर में ही बाबा को ढूंढ़ लिया और वह होश में आता, इससे पहले ही खुशी से किकियाते हुए उसके गाल, आंखें, नाक, मुंह चाटे लिए। बाबा जाग गया, कुत्ते की गरदन से लटकती रस्सी देखी, अपने पास ही लेटे, धूल से सने लड़के को देखा और सब कुछ समझ गया। वह सेर्गेइ से कुछ पूछना-वूछना चाहता था, पर कोई बात न बनी। लड़का हाथ फैलाए, मुंह खोले सो रहा था।